

﴿ ١٣ آياتها ﴾ ﴿ ٦١ سُورَةُ الصَّفِّ مَدَنِيَّةٌ ١٠٩ ﴾ ﴿ ٢ رُكُوعَاتُهَا ﴾

सूरए सफ़ मदनिय्या है, इस में चौदह आयतें और दो रूकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ①

अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और वोही इज़्ज़त व हिकमत वाला है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ ② كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ

ऐ ईमान वालो क्यूं कहते हो वोह जो नहीं करते² कितनी सख्त ना पसन्द है

اللَّهِ أَنْ تَقُولُوا مَا لَا تَفْعَلُونَ ③ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ

अल्लाह को वोह बात कि वोह कहो जो न करो बेशक अल्लाह दोस्त रखता है उन्हें जो उस की राह में

فِي سَبِيلِهِ صَفًّا كَانَهُمْ بَنِيَانٌ مَّرْصُوصٌ ④ وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ

लड़ते हैं परा (सफ़) बांध कर गोया वोह इमारत हैं रांगा (सीसा) पिलाई³ और याद करो जब मूसा ने अपनी कौम से कह

يَقَوْمِ لِمَ تَوَدُّونَنِي وَقَدْ تَعْلَمُونَ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ ⑤ فَلَمَّا

ऐ मेरी कौम मुझे क्यूं सताते हो⁴ हालां कि तुम जानते हो⁵ कि मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ⁶ फिर जब

زَاغُوا أَزَاغَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ ⑥ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ⑦ وَإِذْ

वोह⁷ टेढ़े हुए अल्लाह ने उन के दिल टेढ़े कर दिये⁸ और फ़ासिक लोगों को अल्लाह राह नहीं देता⁹ और याद करो जब

قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ

ईसा बिन मरयम ने कहा ऐ बनी इसराईल मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ

1 : सूरए सफ़ मक्किय्या है और बकौले हज़रते इब्ने अब्बास رضي الله تعالى عنهم व जुम्हूर मुफ़सिरीन मदनिय्या है, इस में दो 2 रूकूअ, चौदह 14 आयतें, दो सो इक्कीस 221 कलिमे, और नव सो 900 हर्फ़ हैं। 2 शाने नुज़ूल : सहाबए किराम की एक जमाअत गुफ़्तगूए कर रही थी येह वोह वक़्त था जब तक कि हुक्मे जिहाद नाज़िल नहीं हुवा था, उस जमाअत में येह तज़िकरा था कि अल्लाह तआला को सब से ज़ियादा क्या अमल प्यारा है ? हमें मा'लूम होता तो हम वोही करते चाहे उस में हमारे माल और हमारी जानें काम आ जातीं, इस पर येह आयत नाज़िल हुई, इस आयत के शाने नुज़ूल में और भी कई कौल हैं। मिन जुम्ला उन के एक येह है कि येह आयत मुनाफ़िकीन के हक़ में नाज़िल हुई जो मुसल्मानों से मदद का झूठा वा'दा करते थे। 3 : एक से दूसरा मिला हुवा, हर एक अपनी अपनी जगह जमा हुवा, दुश्मन के मुक़ाबिल सब के सब मिस्ल शौ वाहिद के। 4 : आयत का इन्कार कर के और मेरे ऊपर झूटी तोहमतें लगा कर 5 : यकीन के साथ 6 : और रसूल वाजिबुत्ता'ज़ीम होते हैं, उन की तौकीर और उन का एहतिराम लाज़िम है, उन्हें ईज़ा देना सख्त हुराम और इन्तिहा दरजे की बद नसीबी है। 7 : हज़रते मूसा عليه السلام को ईज़ा दे कर राहे हक़ से मुन्हरिफ़ और 8 : उन्हें इतिबाए हक़ की तौफ़ीक़ से महरूम कर के। 9 : जो उस के इल्म में ना फ़रमान हैं। इस

مُصَدِّقًا لِّبَابَيْنِ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِنْ

अपने से पहली किताब तौरैत की तस्दीक करता हुवा¹⁰ और उन रसूल की बिशारत सुनाता हुवा जो मेरे बा'द तशरीफ़

بَعْدِي أَسْبَأَ أَحَدٌ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ

लाएंगे उन का नाम अहमद है¹¹ फिर जब अहमद उन के पास रोशन निशानियां ले कर तशरीफ़ लाए बोले येह खुला

مُبِينٌ ۖ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعَى إِلَى

जादू है और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो **अल्लाह** पर झूट बांधे¹² हालां कि उसे इस्लाम की तरफ़

الْإِسْلَامِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ يُرِيدُونَ لِيُطْفَؤُوا

बुलाया जाता हो¹³ और ज़ालिम लोगों को **अल्लाह** राह नहीं देता चाहते हैं कि **अल्लाह** का नूर¹⁴

نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَاللَّهُ مُتِمُّ نُورِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۝ هُوَ

अपने मूंहों से बुझा दें¹⁵ और **अल्लाह** को अपना नूर पूरा करना पड़े बुरा मानें काफ़िर वोही है

الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ

जिस ने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा कि उसे सब दीनों पर ग़ालिब

كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ

करे¹⁶ पड़े बुरा मानें मुश्रिक ऐ ईमान वालो¹⁷ क्या मैं बता दूँ वोह सौदागरी

आयत में तम्बीह है कि रसूलों को ईजा देना शदीद तरिन जुर्म है और इस के वबाल से दिल टेढ़े हो जाते हैं और आदमी हिदायत से महरूम हो जाता है । 10 : और तौरैत व दीगर कुतुबे इलाहिग्रह्यह का इकरार व ए'तिराफ़ करता हुवा और तमाम पहले अम्बिया को मानता हुवा ।

11 हदीस : रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के हुकम से अहमद किराम नजाशी बादशाह के पास गए तो नजाशी बादशाह ने कहा मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद मुस्ताफ़ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ **अल्लाह** तआला के रसूल हैं और वोही रसूल हैं जिन की हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने बिशारत दी, अगर उमुरे सल्तनत की पाबन्दियां न होती तो मैं उन की खिदमत में हाज़िर हो कर कफ़रा बरदारी (ना'लैने शरीफ़न उठाने) की खिदमत बजा लाता । (الإبواب) हज़रते अब्दुल्लाह बिन सलाम से मरवी है तौरैत में सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की सिफ़त मज़कूर है और येह भी

कि हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام आप के पास मदफून होंगे । अबू दावूद मदनी ने कहा कि रौज़ए अक़दस में एक क़ब्र की जगह बाकी है । (त्रयी) हज़रते का'ब अहबार से मरवी है कि हवारियों ने हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام से अर्ज़ किया : या रूहल्लाह ! क्या हमारे बा'द और कोई उम्मत भी है ? फ़रमाया : हां अहमद मुज्तबा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की उम्मत वोह लोग हुकमा, उलमा, अबरार व अत्किया हैं और फ़िक्ह में नाइबे अम्बिया हैं **अल्लाह** तआला से थोड़े रिज़क़ पर राज़ी और **अल्लाह** तआला उन से थोड़े अमल पर राज़ी । 12 : उस की तरफ़ शरीक और

वल्द की निस्वत कर के और उस की आयात को जादू बता कर । 13 : जिस में सआदते दारैने है । 14 : या'नी दीने बरहक़ इस्लाम 15 : कुरआने पाक को शे'र व सेह्वर व कहानत बता कर । 16 : चुनान्हे हर एक दीन ब इनायते इलाही इस्लाम से मग़लूब हो गया । मुजाहिद से मन्कूल है कि जब हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام नुज़ूल फ़रमाएंगे तो रूए ज़मीन पर सिवाए इस्लाम के और कोई दीन न होगा । 17 शाने नुज़ूल :

मोमिनीन ने कहा था कि अगर हम जानते कि **अल्लाह** तआला को कौन सा अमल बहुत पसन्द है तो हम वोही करते इस पर येह आयत नाज़िल हुई और इस आयत में उस अमल को तिजारत से ता'बीर फ़रमाया गया क्यूं कि जिस तरह तिजारत से नफ़अ की उम्मीद होती है इसी तरह उन आ'माल से बेहतरीन नफ़अ रिज़ाए इलाही और जन्त व नजात हासिल होती है ।

11 हदीस : रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के हुकम से अहमद किराम नजाशी बादशाह के पास गए तो नजाशी बादशाह ने कहा मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद मुस्ताफ़ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ **अल्लाह** तआला के रसूल हैं और वोही रसूल हैं जिन की हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने बिशारत दी, अगर उमुरे सल्तनत की पाबन्दियां न होती तो मैं उन की खिदमत में हाज़िर हो कर कफ़रा बरदारी (ना'लैने शरीफ़न उठाने) की खिदमत बजा लाता । (الإبواب) हज़रते अब्दुल्लाह बिन सलाम से मरवी है तौरैत में सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की सिफ़त मज़कूर है और येह भी

कि हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام आप के पास मदफून होंगे । अबू दावूद मदनी ने कहा कि रौज़ए अक़दस में एक क़ब्र की जगह बाकी है । (त्रयी) हज़रते का'ब अहबार से मरवी है कि हवारियों ने हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام से अर्ज़ किया : या रूहल्लाह ! क्या हमारे बा'द और कोई उम्मत भी है ? फ़रमाया : हां अहमद मुज्तबा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की उम्मत वोह लोग हुकमा, उलमा, अबरार व अत्किया हैं और फ़िक्ह में नाइबे अम्बिया हैं **अल्लाह** तआला से थोड़े रिज़क़ पर राज़ी और **अल्लाह** तआला उन से थोड़े अमल पर राज़ी । 12 : उस की तरफ़ शरीक और

वल्द की निस्वत कर के और उस की आयात को जादू बता कर । 13 : जिस में सआदते दारैने है । 14 : या'नी दीने बरहक़ इस्लाम 15 : कुरआने पाक को शे'र व सेह्वर व कहानत बता कर । 16 : चुनान्हे हर एक दीन ब इनायते इलाही इस्लाम से मग़लूब हो गया । मुजाहिद से मन्कूल है कि जब हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام नुज़ूल फ़रमाएंगे तो रूए ज़मीन पर सिवाए इस्लाम के और कोई दीन न होगा । 17 शाने नुज़ूल :

मोमिनीन ने कहा था कि अगर हम जानते कि **अल्लाह** तआला को कौन सा अमल बहुत पसन्द है तो हम वोही करते इस पर येह आयत नाज़िल हुई और इस आयत में उस अमल को तिजारत से ता'बीर फ़रमाया गया क्यूं कि जिस तरह तिजारत से नफ़अ की उम्मीद होती है इसी तरह उन आ'माल से बेहतरीन नफ़अ रिज़ाए इलाही और जन्त व नजात हासिल होती है ।

تِجَارَةٍ تُنَجِّيكُمْ مِّنْ عَذَابِ أَلِيمٍ ١٠ تَوْمُونٌ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَ

जो तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से बचा ले¹⁸ ईमान रखो **अल्लाह** और उस के रसूल पर और

تُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ ١١ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ

अल्लाह की राह में अपने माल व जान से जिहाद करो यह तुम्हारे लिये बेहतर है¹⁹ अगर

كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ١١ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ

तुम जानो²⁰ वोह तुम्हारे गुनाह बख़्शा देगा और तुम्हें बागों में ले जाएगा जिन के नीचे

تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَسْكِنٌ طَيِّبَةٌ فِي جَنَّاتٍ عَدْنٍ ١٢ ذَلِكَ الْفَوْزُ

नहरें रवां और पाकीजा महल्लों में जो बसने के बागों में हैं येही बड़ी

الْعَظِيمِ ١٢ وَأُخْرَى تُحِبُّونَهَا ١٣ نَصْرًا مِّنَ اللَّهِ وَفَتْحٌ قَرِيبٌ ١٤ وَبَشِيرٌ

काम्याबी है और एक नेमत तुम्हें और देगा²¹ जो तुम्हें प्यारी है **अल्लाह** की मदद और जल्द आने वाली फ़त्ह²² और ऐ महबूब

الْمُؤْمِنِينَ ١٣ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا أَنْصَارًا لِلَّهِ كَمَا قَالَ

मुसलमानों को खुशी सुना दो²³ ऐ ईमान वालो दीने खुदा के मददगार हो जैसे²⁴

عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيِّينَ مَن أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ ١٥ قَالَ

ईसा बिन मरयम ने हवारियों से कहा था कौन हैं जो **अल्लाह** की तरफ़ हो कर मेरी मदद करें हवारी

الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ فَأَمَنْتُ طَائِفَةٌ مِّنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَ

बोले²⁵ हम दीने खुदा के मददगार हैं तो बनी इसराइल से एक गुरौह ईमान लाया²⁶ और

كَفَرَتْ طَائِفَةٌ فَأَيَّدْنَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَىٰ عَدُوِّهِمْ فَأَصْبَحُوا ظَاهِرِينَ ١٦

एक गुरौह ने कुफ़र किया²⁷ तो हम ने ईमान वालों को उन के दुश्मनों पर मदद दी तो ग़ालिब हो गए²⁸

18 : अब वोह त्तिजारात बताई जाती है। 19 : जान और माल और हर एक चीज़ से 20 : और ऐसा करो तो 21 : इस के इलावा जल्द मिलने वाली 22 : इस फ़त्ह से या फ़त्हे मक्का मुराद है या बिलादे फ़रस व रूम की फ़त्ह। 23 : दुन्या में फ़त्ह की और आखिरत में जन्नत की।

24 : हवारियों ने दीने इलाही की मदद की थी जब कि 25 : हवारी हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के मुख़्तसिीन को कहते हैं, येह बारह हज़रात थे जो हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام पर अव्वल ईमान लाए, इन्हों ने अर्ज़ किया : 26 : हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام पर 27 : इन दोनों में किताल हुवा 28 : ईमान वाले। इस आयत की तफ़सीर में येह भी कहा गया है कि जब हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام आस्मान पर उठा लिये गए तो उन की क़ौम तीन फ़िर्कों में मुन्क़सिम हो गई एक फ़िर्के ने हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की निस्वत कहा कि वोह **अल्लाह** था आस्मान पर चला गया दूसरे फ़िर्के ने कहा वोह **अल्लाह** तआला का बेटा था उस ने अपने पास बुला लिया तीसरे फ़िर्के ने कहा कि वोह **अल्लाह** तआला के बन्दे और उस के रसूल थे उस ने उठा लिया, येह तीसरे फ़िर्के वाले मोमिन थे, इन की उन दोनों फ़िर्कों से जंग रही और काफ़िर गुरौह इन पर ग़ालिब रहे, यहां तक कि सय्यिदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने जुहूर फ़रमाया उस वक़्त ईमानदार गुरौह उन काफ़िरों पर ग़ालिब हुवा, इस तक्दीर पर